Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Impact Factor : 2.1506(UIF)
Volume-4 | Issue-3 | April-2014 Available online at www. lbp.world

अनुभवों की आग में तप गई : माँ और बेटी !

(मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा 'कस्तूरी कुंडल बसै' के संदर्भ में)

डॉ. जयश्री शिंदे
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, यु.ई.एस. महिला महाविद्यालय, सोलापुर।

प्रस्तावना :

पिछले पच्चीस वर्षो से महिलाओं मे आई जागृति और शिक्षा के दौर ने महिला कथा कारों को प्रभावित किया है। साहित्य जगत में लेखिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हिंदी साहित्य में अब तक काफी आत्मकथाएँ लिखी गई है। लेकिन वह पुरुष साहित्यकारों की तुलना में निश्चित रुप से कम ही हैं। परंतु महिला कथाकारों ने आत्मकथा के माध्यम से अपने जीवन के रहस्यों को नि:संकोच रुप से चित्रित किया है। अपने अंतरंग अनुभवों को खुलकर कहना कोई साधारण बात नहीं। मानव सभ्यता का इतिहास गवाह है कि स्त्री जीवन दुधारी तलवार पर चलनें-सा कठीन प्रयास है। आज भी पुरुष जाति के समकक्ष स्वयं को खडा करना स्त्री के लिए अत्यंत संघर्षमय काम है। महिलाओं की काबिलियत को विकसित करने का अवसर लेखन क्षेत्र ने निर्माण किया है। फलस्वरुप महिला कथाकारोंने अपनी विशिष्ठ पहचान साहित्य क्षेत्र में बनाई है। पंजाबी लेखिका अमृता प्रितम का 'रसीदी टिकट', तस्लिमा नसरिन का 'मेरे बचपन के दिन' कौर का 'खाना बदोश' और 'कुडा कबाडा' जैसे मौलिक आत्मकथात्मक उपन्यास इसके प्रमाण है। यह आत्मकथा की परंपरा हमें दलित साहित्य में भी देखने को मिलती है।

२० वी सदी के अंतिम दशक में 'कस्तूरी कुंडल' बसै- मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा प्रकाशित हुई। इसमें मानवीय संबंधों नाते-रिश्ते पर एक प्रश्न उठाया गया है। आत्मकथा पढने के बाद मेरे मन में कई सवाल उठे, कुछ सवालों का जवाब मिला और कुछ सवाल सवाल बनकर रह गए। क्या 'कस्तूरी मंडल बसै' आत्मविश्लेषण में इतनी कडवी यथार्थता है ? इस प्रश्न की पूर्ति हेतु मैने लेखिका के अंतरंग को देखने की कोशिश की है। अपने बीहड जीवन अनुभवों और विपुल रचनात्मक जिजीविषा के चलते मैत्रेयी पिछले कुछ वर्षो में अग्रणी कथाकार के रुप में उभरी है । आत्मकथात्मक उपन्यास के पात्र अत्यंत भावो वेगों से अपनी सामाजिक पहचान बनाते है। बीहड जीवनानुभव जो स्त्री को महज एक देह बनाकर रख देता है। इसलिए यह कहना उचित होगा कि मैत्रेयी का दर्द सहने के लिए एक चट्टान-सा मन चाहिए। माँ और बेटी की लडाई दूहरी है, औरत होने की और वंचित अधिकारों की।

'कस्तूरी कुंडल बसै' की समस्या- मैत्रेयी की माँ कस्तूरी, ग्राम समाज में रहती है। जहाँ बिकनेवाली चीजों में लडकियाँ भी हैं। बेटे को ब्याहने के बदले माँ अपनी बेटी को बूढे से ब्याहने का सौदा करती है। आठ सौ चांदी के सिक्कों मे पति के घरवालों दूवारा उसे बेचा जाता है परिणामस्वरुप असे 'खरिदी हुई घोडी' का दर्जा दिया जाता है। असमय वैधव्य आने के कारण सारे पारंपारिक नियमों को त्यागकर वह नौकरी करती है और आत्मनिर्भर बनती है। जिस कस्तूरी ने अपनी पूरी जिंदगी विवाह के लिए लगा दी हो, उसी की बेटी का थक-हार कर अपनी शिक्षा के दौर में यह कहना कि, 'माँ मेरी शादी कर दो' दो विचारधारों की टकराहट को दर्शाता है।

'कस्तूरी- कुंडल बसै' की समस्त घटनाएँ और परिवेश यथार्थवादी है। इस आत्मकथा में एक श्रेष्ठ उपन्यास लेखिका मैत्रेयी अपनी पीडा का बयान कर रही है। जब माँ मैत्रेयी को पुरुषों की वासना से बचाना चाहती है, तभी बेटी उपने लिए जीवनसाथी ढूंढना चाहती है। माँ कस्तूरी आत्मसम्मानी नारी के रुप में प्रस्तुत होती है। लेकिन पुरुषों के वर्चस्व का शिकार बनती है, भगवानदास शेठ के अपनत्व की चादर तले छिप जाना चाहती है।

वह 'महिला मंगल संस्था' के माध्यम से पारंपारिक नियमों को त्यागकर एक ऐसा जीवन जीती है कि जहाँ पर पुरुष की सख्त आवश्यकता होती है वहाँ पर भी वह पुरुष अस्तित्व को ठूकराती है।

मर्दों की दुनियाँ मे औरत की कोई स्वतंत्र पहचान नहीं। इस समाज में वे मनुष्य तो क्या औरत भी नहीं, रांड है, विधवा है बस। मैत्रेयी अपना अस्तित्व माँ मे खोजती हे। इसलिए आत्मकथा के साथ यह एक जीवनी भी है। इसमें अपने वजूद को माँ में खोजने की लगातार कोशिश व छटपटाहट दिखाई देती है।

मैत्रेयी नेशादी को मुक्ति का रास्ता माना था। जीवन दृश्यों मे भिन्नता, जीवन- मूल्यों का अलगाव जो दोपीढियों के बीच खाई बनकर उभरता है वह कस्तूरी के मूल में भी है। परंतु आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि युवा मैत्रेयी बेडियों मे बंधने को खुद घोषित करती है और विधवा कस्तूरी उसे इन बेडियों से आजाद रखने के लिए कभी- कभी क्रूरता की सीमा को भी पार करती है। इसलिए माँ का सत्य बेटी का जीवन सत्य नहीं, उसे अपने अनुभवों अपने संघर्षो से ही पाया जा सकता है। जीवन की सि कसौटी पर कस्तूरी घिस-घिस कर सोना बनी है, बेटी उस कसौटी को ही नकारती है। कस्तूरी का जीवन ध्येय महिलाओं को शिक्षित और स्वावलंबी बनाना है, तो माँ की नौकरी और बाबा की मृत्यु की वजह से वह शिक्षा के नाम पर दर दर भटकती है नन्हीं सी उम्र मे ही तरह- तरह के मानसिक और शारीरिक व्यभिचारों से झुजती मैत्रेयी के लिए विवाह ही वह अपरिहार्य स्थिति दिाती है, जिसमें उसे ऐसा घर मिल सकता है सिकी चहार दीवारी और छत तले वह दुनिया की कुत्सित निगाहों से बच सकेगी, जो उसका अपना होगा।

सुरक्षा से वंचित मैत्रेयी हर पल असुरक्षित महसूस करती है। उसे पढाई के दौरान पढाई से नहीं रास्ते का डर था। माँ से दूर घर में असुरक्षित मैत्रेयी थक हार कर सिान से विवाह करना चाहती है। मैत्रेयी ने खेतों में फूलों का सपना देखा है,माँ जीवन उजाडने पर तुल गई हे।

मैत्रेयी हवा का रुख बदलकर साजन के घर पहूँचती है। तब उसे कडवे सत्य का पता चल जाता है कि 'विवाह' भी वह सुखद अनुभव नही जिसे वह अब तक कल्पनाओं के रंग से सजाती थी। उसकी सुरत और स्वच्छंद स्वभाव उसका दोष बन जाते हैं। पहली बेटी को पैदा करते ही सारे समाज की नजरों में उसके सारे शुभ लक्षण, कुलक्षण माने जाने लगते है। वह खुद कसूरवार मानी जाती है, पति भी समाज की रीति निती की दुहाई देते दिखाई देते है। जिस माँ के कलेजे से लगकर वह अपनी सारी पीर कह सके, वह माँ भी अब पास नहीं होती है। भविष्य की चिंता लिए अकेली मैत्रेयी उसके हक के लिए सबसे लढती है। तभी असल में माँ को जान पाती है। अपनेमें छिपी कस्तूरी को वह पहचान पाती है। इसलिए मैत्रेयी कहती है, ''मेरा मन उस बीते समय से थर्रा जाता है, क्योंकि मै निपट अकेली रह गई .... मेरे मन मधुबन के सखा-साथी, जीवन के बीहड के सहयात्री-कबुतर की नाई उड गए .... और निलकंठ हो गए माँ .... मै दर्शन को तरस गई।''

समकालीन कथा- लेखन में सक्रिय क सशक्त हस्ताक्षर मेत्रेयी का आत्मकथात्मक उपन्यास लिखने के कई उद्देश्य हो सकते है। बीहड अनुभव, बीहड समाज में स्त्री का स्थान, विवाहः एक समस्या, दहेज प्रथा, पैसों के लिए लडकियों को बेचना, विधवा समस्या, कुंवारी बने रहने की मजबूरी, पुरुषों का वर्चस्व, जमीनदारों का वर्चस्व, शिक्षा क्षेत्र में अनैतिकता का व्यवहार, परित्यक्ताओं की समस्याएँ, स्त्री सबलीकरण आदि समस्याओं का अकन कर हल ढूढना आदि। जैसे-जैसे महिलाओं मे शिक्षा का प्रसार हो रहा है वे अपने अधिकरों के प्रति अधिक जागरुक हो रही है। पुरुषों की सत्ता जब अत्याचार, अन्यायपूर्ण व्यवाहर करती है तब स्त्रियों को अपने अधिकार के लिए लडना पडता है। स्त्रियों को अवसर मिले तो साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक क्षेत्र में भी वे अपनी योग्यताएँ सिद्ध कर सकती है। इसे लेखिका स्पष्ट करना चाहती है।

मैत्रेयी के साहित्य का मूल्यांकन करते समय एक सही दिशा मिल सकती है। वे भाषागत बिंबो और दृश्यों को सजीव कर देने की उपनी अद्भूत क्षमता को सिद्ध कर जिन पात्रों का निर्माण करती है। उन्हे महसूस करना एक विलक्षण अनुभव से गुजरना है। 'ललमनियाँ' की मौहरों, 'रिजक' की लल्लन 'पगला गई है भागवती' की भागो, 'सिस्टर' की डोरोथाी 'इदन्नमम्' की मंदा, 'चाक' की सारंग, 'अल्मा कबूतरी' की अल्मा 'झूला नट' की शीलों और विजन की नेहा आदि सभी स्त्रियाँ अपने परिस्थितिगत गहरे करुणा भाव के साथ पाठक के मन में गहरे उतर जाती है। इन पात्रों को गहराई से समझने, अनुभव करने के लिए एक नई दिशा मिलती है। मनोबैज्ञानिक पक्ष इस आत्मकथा का एक सशक्त पक्ष है। मैत्रेयी की यह आत्मकथा ही वह पहली कृति होगी जो स्पष्टवादिता और अपनी बेबाक ईमानदारी के कारण निश्चिय ही प्रशंसा ही हकदार रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ

१. कस्तूरी कुंडल बसै-मैत्रेयी पुष्पा
२. 'हंस' जनवरी, फरवरी-२०००
३. 'हंस' मार्च- २००१
४. 'हंस' अगस्त – २००२
५. 'हंस' सितंबर – २००२
६. हिंदी आत्मकथा साहित्य का शैलीगत अध्ययन – डॉ. कमलापति उपाध्याय